
सप्तवार व्रत कथा
NARESH

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

❖ सप्तवार व्रत कथा ❖

रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार तथा सोलह सोमवार व्रत कथा, सौम्य प्रदोष व्रत, विधि पूजन सहित

मनवांछित फल देने वाली सप्तवार व्रत कथा

सरल हिन्दी भाषा में

प्रकाशक -

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्ली मारान, दिल्ली-110006

मूल्य : बीस रुपए

रविवार (इतवार) के व्रत करने की विधि

सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु रविवार का व्रत श्रेष्ठ है। इस व्रत की विधि इस प्रकार है। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें। शान्तचित्त होकर परमात्मा का स्मरण करें। भोजन एक समय से अधिक नहीं करना चाहिए। भोजन तथा फलाहार सूर्य के प्रकाश रहते ही कर लेना उचित है। यदि निराहार रहने पर सूर्य छिप जाये तो दूसरे दिन सूर्य उदय हो जाने पर अर्घ्य देने के बाद ही भोजन करें। व्रत के अंत में व्रत कथा सुननी चाहिए। व्रत के दिन नमकीन तेलयुक्त भोजन कदापि ग्रहण न करें। इस व्रत के करने से मान-सम्मान बढ़ता है तथा शत्रुओं का क्षय होता है। आँख की पीड़ा के अतिरिक्त अन्य सब पीड़ायें दूर होती हैं।

रविवार (इतवार) व्रत कथा प्रारम्भ

एक बुढ़िया थी। उसका नियम था प्रति रविवार को सबेरे ही स्नान आदि कर घर को गोबर से लीपकर फिर भोजन तैयार कर भगवान को भोग लगा स्वयं भोजन करती थी। ऐसा व्रत करने से उसका घर अनेक प्रकार धन धान्य से पूर्ण था। श्री हरि की कृपा से घर में किसी प्रकार का विघ्न या दुःख नहीं था। सब प्रकार से घर में आनन्द रहता था। इस तरह कुछ दिन बीत जाने पर उसकी एक पड़ोसन जिसकी गौ का गोबर वह बुढ़िया लाया करती थी। विचार करने लगी कि यह वृद्धा सर्वदा मेरी गौ का गोबर ले जाती है। इसलिये अपनी गौ को घर के भीतर बांधने लग गई। बुढ़िया को गोबर न मिलने से रविवार के दिन अपने घर को न लीप सकी। इसलिए उसने न तो भोजन बनाया न भगवान को भोग लगाया तथा स्वयं भी उसने भोजन नहीं किया। इस प्रकार उसने निराहार

व्रत किया। रात्रि हो गई और वह भूखी सो गई। रात्रि में भगवान ने उसे स्वप्न दिया और भोजन न बनाने तथा लगाने का कारण पूछा। वृद्धा ने गोबर न मिलने का कारण सुनाया तब भगवान ने कहा कि माता हम तुमको ऐसी गौ देते हैं जिससे सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं क्योंकि तुम हमेशा रविवार को गौ के गोबर से लीपकर भोजन बनाकर मेरा भोग लगाकर खुद भोजन करती हो। इससे मैं खुश होकर तुमको वरदान देता हूँ। निर्धन को धन और बाँझ स्त्रियों को पुत्र देकर दुःखों को दूर करता हूँ तथा अन्त समय में मोक्ष देता हूँ। स्वप्न में ऐसा वरदान देकर भगवान तो अन्तर्धान हो गए और वृद्धा की आँख खुली तो वह देखती है कि आंगन में एक अति सुन्दर गौ और बछड़ा बँधे हुए हैं। वह गाय और बछड़े को देखकर अतीव प्रसन्न हुई और उसको घर के बाहर बांध दिया और वहीं खाने को चारा डाल दिया। जब उसकी पड़ोसन बुढ़िया ने घर के बाहर एक अति सुन्दर गौ और बछड़े को देखा तो द्वेष के कारण उसका हृदय जल उठा और उसने देखा कि गाय ने सोने का गोबर किया है तो वह उस गाय का गोबर ले गई और अपनी गाय का गोबर उसकी जगह पर

रख गई। वह नित्यप्रति ऐसा ही करती रही और सीधी-साधी बुढ़िया को इसकी खबर नहीं होने दी तब सर्वव्यापी ईश्वर ने सोचा कि चालाक पड़ोसन के कर्म से बुढ़िया ठगी जा रही है तो ईश्वर ने संध्या के समय अपनी माया से बड़े जोर की आँधी चला दी। बुढ़िया ने अन्धेरी के भय से अपनी गौ को भीतर बांध लिया। प्रातः काल जब वृद्धा ने देखा कि गौ ने सोने का गोबर दिया है तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही और वह प्रतिदिन गऊ को घर के भीतर बांधने लगी। उधर पड़ोसन ने देखा कि बुढ़िया गऊ को घर के भीतर बांधने लगी है और उसका सोने का गोबर उठाने का दाँव नहीं चलता तो वह ईर्ष्या और डाह से जल उठी और कुछ उपाय न देख पड़ोसन ने उस देश के राजा की सभा में जाकर कहा महाराज मेरे पड़ोस में एक वृद्धा के पास ऐसी गऊ है जो आप जैसे राजाओं के ही योग्य है, वह नित्य सोने का गोबर देती है। आप उस सोने से प्रजा का पालन करिये। वह वृद्धा इतने सोने का क्या करेगी। राजा ने यह बात सुन अपने दूतों को वृद्धा के घर से गऊ लाने की आज्ञा दी। वृद्धा प्रातः ईश्वर का भोग लगा भोजन ग्रहण करने ही जा रही थी कि राजा के

कर्मचारी गऊ खोलकर ले गये। वृद्धा काफी रोई-चिल्लाई किन्तु कर्मचारियों के समक्ष कोई क्या कहता? उस दिन वृद्धा गऊ के वियोग में भोजन न खा सकी और रात भर रो-रो ईश्वर से गऊ को पुनः पाने के लिए प्रार्थना करती रही। उधर राजा गऊ को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन सुबह जैसे ही वह उठा, सारा महल गोबर से भरा दिखाई देने लगा। राजा यह देख घबरा गया। भगवान ने रात्रि में राजा को स्वप्न में कहा कि हे राजा! गाय वृद्धा को लौटाने में ही नेरा भला है उसके रविवार के व्रत से प्रसन्न होकर मैंने उसे गाय दी थी। प्रातः होते ही राजा ने वृद्धा को बुलाकर बहुत से धन के साथ सम्मान सहित गऊ बछड़ा लौटा दिया। उसकी पड़ोसिन दुष्ट बुढ़िया को बुलाकर उचित दण्ड दिया। इतना करने के बाद राजा के महल से गन्दगी दूर हुई। उसी दिन से राजा ने नगरवासियों को आदेश दिया कि राज्य की तथा अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये रविवार का व्रत करो। व्रत करने से नगर के लोग सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। कोई भी बीमारी तथा प्रकृति का प्रकोप इस नगर पर नहीं होता था। सारी प्रजा सुख से रहने लगी।

अथ रविवार की आरती

कहुँ लगि आरती दास करेंगे, सकल जगत जाकी जोत बिराजे ॥ टेक ॥
सात समुद्र जाके चरणनि बसे, कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम।
कोटि भानु जाके नख की शोभा, कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम।
भार अठारह रामा बलि जाके, कहा भयो शिर पुष्पधरे हो राम।
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे, कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
अमित कोटि जाके बाजा बाजे, कहा भयो झनकार करे हो राम।
चार वेद जाके मुख की शोभा, कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम।
हिम मंदार जाको पवन झकोरें, कहा भयो शिव चँवर ढुरे हो राम।
लख चौरासी वन्दे छुड़ाये, केवल हरियश नामदेव गाये ॥ हो रामा ॥

सोमवार के व्रत करने की विधि

सोमवार का व्रत साधारणतया दिन के तीसरे पहर तक होता है। व्रत में फलाहार या पारण का कोई खास नियम नहीं है किन्तु यह आवश्यक है कि दिन रात में केवल एक समय भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिवजी पार्वती का पूजन करना चाहिए। सोमवार के व्रत तीन प्रकार के हैं -साधारण प्रति सोमवार, सौम्य प्रदोष और सोलह सोमवार विधि तीनों की एक जैसी है। शिव पूजन के पश्चात् कथा सुननी चाहिए। प्रदोष व्रत सोलह सोमवार कथा तीनों की अलग-अलग है जो आगे लिखी गई है।

सोमवार व्रत कथा प्रारम्भ

एक बहुत धनवान साहूकार था, जिसके घर धन आदि किसी प्रकार की कमी नहीं थी। परन्तु उसको एक दुःख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। वह इसी चिन्ता में रात-दिन रहता था। वह पुत्र की कामना के लिए प्रति सोमवार को शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा सायंकाल को शिव मन्दिर में जाकर शिवजी के श्री विग्रह के सामने दीपक जलाया करता था। उसके इस

भक्तिभाव को देखकर एक समय श्री पार्वतीजी ने शिवजी महाराज से कहा कि महाराज, यह साहूकार आप का अनन्य भक्त है और सदैव आपका व्रत और पूजन बड़ी श्रद्धा से करता है। इसकी मनोकामना पूर्ण करनी चाहिए।

शिवजी ने कहा "हे पार्वती! यह संसार कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल काटता है। उसी तरह इस संसार में जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल भोगते हैं।" पार्वती जी ने अत्यंत आग्रह से कहा-"महाराज! जब यह आपका अनन्य भक्त है और इसको अगर किसी प्रकार का दुःख है तो उसको अवश्य दूर करना चाहिए क्योंकि आप सदैव अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दुःखों को दूर करते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपकी सेवा तथा व्रत क्यों करेंगे।"

पार्वती जी का ऐसा आग्रह देख शिवजी महाराज कहने लगे-"हे पार्वती! इसके कोई पुत्र नहीं है इसी चिन्ता में यह अति दुःखी रहता है। इसके भाग्य में पुत्र न होने पर भी मैं इसको पुत्र की

प्राप्ति का वर देता हूँ। परन्तु यह पुत्र केवल बारह वर्ष तक जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। इससे अधिक मैं और कुछ इसके लिए नहीं कर सकता।'' यह सब बातें साहूकार सुन रहा था। इससे उसको न कुछ प्रसन्नता हुई और न ही कुछ दुःख हुआ। वह पहले जैसा ही शिवजी महाराज का व्रत और पूजन करता रहा। कुछ काल व्यतीत हो जाने पर साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और दसवें महीने उसके गर्भ से अति सुन्दर पुत्र की प्राप्ति हुई। साहूकार के घर में बहुत खुशी मनाई गई परन्तु साहूकार ने उसकी केवल बारह वर्ष की आयु जान कोई अधिक प्रसन्नता प्रकट नहीं की और न ही किसी को भेद ही बताया। जब वह बालक ११ वर्ष का हो गया तो उस बालक की माता ने उसके पिता से विवाह आदि के लिए कहा तो वह साहूकार कहने लगा कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूंगा। अपने पुत्र को काशीजी पढ़ने के लिए भेजूंगा। फिर साहूकार ने अपने साले अर्थात् बालक के मामा को बुला उसको बहुत-सा धन देकर कहा तुम इस बालक को काशी जी पढ़ने के लिये ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर भी जाओ यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन

करातें जाओ।

वह दोनों मामा-भानजे यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते जा रहे थे। रास्ते में उनको एक शहर पड़ा। उस शहर में राजा की कन्या का विवाह था और दूसरे राजा का लड़का जो विवाह कराने के लिये बारात लेकर आया था वह एक आँख से काना था। उसके पिता को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं वर को देख कन्या के माता पिता विवाह में किसी प्रकार की अड़चन पैदा न कर दें। इस कारण जब उसने अति सुन्दर सेठ के लड़के को देखा तो मन में विचार किया कि क्यों न दरवाजे के समय इस लड़के से वर का काम चलाया जाये। ऐसा विचार कर वर के पिता ने उस लड़के और मामा से बात की तो वे राजी हो गये फिर उस लड़के को वर के कपड़े पहना तथा घोड़ी पर चढ़ा दरवाजे पर ले गये और सब कार्य प्रसन्नता से पूर्ण हो गया। फिर वर के पिता ने सोचा कि यदि विवाह कार्य भी इसी लड़के से करा लिया जाये तो क्या बुराई है? ऐसा विचार कर लड़के और उसके मामा से कहा-यदि आप फेरों का और कन्यादान के काम को भी

करा दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी और मैं इसके बदले में आपको बहुत कुछ धन दूंगा तो उन्होंने स्वीकार कर लिया और विवाह कार्य भी बहुत अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया। परन्तु जिस समय लड़का जाने लगा तो उसने राजकुमारी की चुन्दड़ी के पल्ले पर लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुमको भेजेंगे वह एक आँख से काना है और मैं काशी जी पढ़ने जा रहा हूँ। लड़के के जाने के पश्चात् उस राजकुमारी ने जब अपनी चुन्दड़ी पर ऐसा लिखा हुआ पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया और कहा कि यह मेरा पति नहीं है। मेरा विवाह इसके साथ नहीं हुआ है। वह तो काशी जी पढ़ने गया है। राजकुमारी के माता-पिता ने अपनी कन्या को विदा नहीं किया और बारात वापस चली गयी। उधर सेठ का लड़का और उसका मामा काशी जी पहुंच गए। वहाँ जाकर उन्होंने यज्ञ करना और लड़के ने पढ़ना शुरू कर दिया। जब लड़के की आयु बारह साल की हो गई उस दिन उन्होंने यज्ञ रचा रखा था कि लड़के ने अपने मामा से कहा-"मामाजी आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।" मामा ने कहा-"अन्दर

जाकर सो जाओ।" लड़का अन्दर जाकर सो गया और थोड़ी देर में उसके प्राण निकल गए। जब उसके मामा ने आकर देखा तो वह मुर्दा पड़ा है तो उसको बड़ा दुःख हुआ और उसने सोचा कि अगर मैं अभी रोना-पीटना मचा दूंगा तो यज्ञ का कार्य अधूरा रह जाएगा। अतः उसने जल्दी से यज्ञ का कार्य समाप्त कर ब्राह्मणों के जाने के बाद रोना-पीटना आरम्भ कर दिया। संयोगवश उसी समय शिव-पार्वतीजी उधर से जा रहे थे। जब उन्होंने जोर-जोर से रोने की आवाज सुनी तो पार्वती जी कहने लगीं-"महाराज! कोई दुखिया रो रहा है इसके कष्ट को दूर कीजिए। जब शिव-पार्वती पास जाकर देखे तो वहां एक लड़का मुर्दा पड़ा था। पार्वती जी कहने लगीं-महाराज यह तो उसी सेठ का लड़का है जो आपके वरदान से हुआ था। शिवजी कहने लगे-"हे पार्वती! इसकी आयु इतनी थी सो यह भोग चुका।" तब पार्वती जी ने कहा-"हे महाराज! इस बालक को और आयु दो नहीं तो इसके माता-पिता तड़प-तड़प कर मर जायेंगे।" पार्वती जी के बार-बार आग्रह करने

पर शिवजी ने उसको जीवन वरदान दिया और शिवजी महाराज की कृपा से लड़का जीवित हो गया। शिव-पार्वती कैलाश चले गए।

तब वह लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते अपने घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उसी शहर में आए जहां उसका विवाह हुआ था। वहां पर आकर उन्होंने यज्ञ आरंभ कर दिया तो उस लड़के के ससुर ने उसको पहचान लिया और अपने महल में ले जाकर उसकी बड़ी खातिर की साथ ही बहुत दास-दासियों सहित आदर पूर्वक लड़की और जमाई को विदा किया। जब वह अपने शहर के निकट आए तो मामा ने कहा मैं पहले तुम्हारे घर जाकर खबर कर आता हूँ। जब उस लड़के का मामा घर पहुंचा तो लड़के के माता-पिता घर की छत पर बैठे थे और यह प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सकुशल लौट आया तो हम राजी-खुशी नीचे आ जायेगे नहीं तो छत से गिरकर अपने प्राण खो देंगे। इतने में उस लड़के के मामा ने आकर यह समाचार दिया कि आपका पुत्र आ गया है तो उनको विश्वास नहीं आया तब उसके मामा ने शपथ

पूर्वक कहा कि आपका पुत्र अपनी स्त्री के साथ बहुत सारा धन लेकर आया है तो सेठ ने आनन्द के साथ उसका स्वागत किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ रहने लगे। इसी प्रकार से जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस कथा को पढ़ता और सुनता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

सौम्य प्रदोष व्रत कथा

पूर्वकाल में एक ब्राह्मणी अपने पति की मृत्यु के पश्चात् निराधार होकर भिक्षा मांगने लग गई। वह प्रातः होते ही अपने पुत्र को साथ लेकर बाहर निकल जाती और संध्या होने पर घर वापिस लौटती। एक समय उसको विदर्भ देश का राजकुमार मिला जिसके पिता की शत्रुओं ने उसको मारकर राज्य से बाहर निकाल दिया था। इस कारण वह मारा-मारा फिरता था। ब्राह्मणी उसे अपने

साथ घर ले गई और उसका पालन पोषण करने लगी। एक दिन उन दोनों बालकों ने बन में खेलते-खेलते गन्धर्व कन्याओं को देखा। ब्राह्मण का बालक तो अपने घर आ गया परन्तु राजकुमार साथ नहीं आया क्योंकि वह अंशुमती नाम की गन्धर्व कन्या से बातें करने लगा था दूसरे दिन वह फिर अपने घर से आया वहां पर अंशुमति अपने माता-पिता के साथ बैठी थी। उधर ब्राह्मणी ऋषियों की आज्ञा से प्रदोष का व्रत करती थी कुछ दिन पश्चात् अंशुमति के माता-पिता ने राजकुमार से कहा कि तुम विदर्भ देश के राजकुमार धर्मगुप्त हो, हम श्री शंकर जी की आज्ञा से अपनी पुत्री अंशुमति का विवाह तुम्हारे साथ कर देते हैं। फिर राजकुमार का विवाह अंशुमति के साथ हो गया। बाद में राजकुमारने गन्धर्वराज की सेना की सहायता से विदर्भ देश पर अधिकार कर लिया। और ब्राह्मण के पुत्र को अपना मंत्री बना लिया। यथार्थ में यह सब उस ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत करने का फल था। बस उसी समय से यह प्रदोष व्रत संसार में प्रतिष्ठित हुआ।

सोलह सोमवार व्रत कथा

मृत्यु लोक में विवाह करने की इच्छा करके एक समय श्री भूतनाथ महादेव जी माता पार्वती के साथ प्रधारे, वहां वे भ्रमण करते-करते विदर्भ देशांतर्गत अमरावती नाम की अतित रमणीक नगरी में पहुंचे। अमरावती नगरी अमरापुरी के सदृश सब प्रकार के सुखों से परिपूर्ण थी। उसमें वहां के महाराज का बनाया हुआ अति रमणीक शिवजी का मन्दिर बना था। उसमें भगवान शंकर भगवती पार्वती के साथ निवास करने लगे। एक समय माता पार्वती ने प्राणपति को प्रसन्न देख के मनोविनोद करने की इच्छा से बोलीं- ''हे महाराज! आज तो हम तुम दोनों चौसर खेलें। शिवजी ने प्राणप्रिया की बात को मान लिया और चौसर खेलने लगे। उस समय इस स्थान पर मन्दिर का पुजारी ब्राह्मण मन्दिर में पूजा करने को आया। माताजी ने ब्राह्मण से प्रश्न किया कि पुजारी जी बताओ कि इस बाजी में दोनों में किसकी जीत होगी। ब्राह्मण बिना विचारे ही शीघ्र बोल उठा कि महादेवजी की जीत होगी। थोड़ी देर में बाजी समाप्त हो गई

और पार्वती जी की विजय हुई। अब तो पार्वती जी ब्राह्मण को झूठ बोलने के अपराध के कारण श्राप देने को उद्यत हुई। तब महादेव जी ने पार्वती जी को बहुत समझाया परन्तु उन्होंने ब्राह्मण को कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। कुछ समय बाद पार्वती जी के श्रापवश पुजारी के शरीर में कोढ़ पैदा हो गया। इस प्रकार पुजारी अनेक प्रकार से दुखी रहने लगा। इस तरह के कष्ट भोगते हुए जब बहुत दिन हो गये तो देवलोक की अप्सरायें शिवजी की पूजा करने उसी मन्दिर में पधारी और पुजारी के कष्ट को देख बड़े दयाभाव से उससे रोगी होने का कारण पूछने लगीं-'' पुजारी ने निःसंकोच सब बातें उनसे कह दी।'' वे अप्सरायें बोलीं-''हे पुजारी! अब तुम अधिक दुखी मत होना भगवान् शिवजी तुम्हारे कष्ट को दूर कर देंगे। तुम सब बातों में श्रेष्ठ षोडश सोमवार का व्रत भक्तिभाव से करो। तब पुजारी अप्सराओं से हाथ जोड़कर विनम्र भाव से षोडश सोमवार व्रत की विधि पूछने लगा। अप्सरायें बोलीं कि जिस दिन सोमवार हो उस दिन भक्ति के साथ व्रत करें स्वच्छ वस्त्र पहनें आधा सेर गेहूँ का आटा ले उसके तीन अंगा बनावे और घी, गुड़, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, बेलपत्र, जनेऊ जोड़ा, चन्दन, अक्षत, पुष्पादि के द्वारा प्रदोष काल में

भगवान शंकर का विधि से पूजन करे तत्पश्चात् अंगाओं में से एक शिवजी को अर्पण करें बाकी दो को शिवजी का प्रसाद समझकर उपस्थित जनों में बांट दें और आप भी प्रसाद पावें। इस विधि से सोलह सोमवार व्रत करें। तत्पश्चात् सत्रहवें सोमवार के दिन पाव सेर पवित्र गेहूं के आटे की बाटी बनावें तदनुसार घी और गुड़ मिलाकर चूरमा बनावें और शिवजी का भोग लगाकर उपस्थित भक्तों में बांटे पीछे आप सकुटुम्ब प्रसादी लें तो भगवान शिवजी की कृपा से उसके मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। ऐसा कहकर अप्सरायें स्वर्ग को चली गयीं। ब्राह्मण ने यथाविधि षोडश सोमवार व्रत किया तथा भगवान शिवजी की कृपा से रोग मुक्त होकर आनन्द से रहने लगा। कुछ दिन बाद जब फिर शिवजी और पार्वती उस मन्दिर में पधारे, तब ब्राह्मण को निरोग देखकर पार्वती ने ब्राह्मण से रोग-मुक्त होने का कारण पूछा तो ब्राह्मण ने सोलह सोमवार व्रत कथा कह सुनाई। तब तो पार्वती जी अति प्रसन्न होकर ब्राह्मण से व्रत की विधि पूछकर व्रत करने को तैयार हुई। व्रत करने के बाद उनकी मनोकामना पूर्ण हुई तथा उनके रूठे पुत्र स्वामी कार्तिकेय स्वयं माता के आज्ञाकारी हुए परन्तु कार्तिकेय जी को अपने विचार परिवर्तन का रहस्य जानने की इच्छा

हुई और माता से बोले-"हे माताजी! आपने ऐसा कौन-सा उपाय किया जिससे मेरा मन आपकी ओर आकर्षित हुआ। तब पार्वती जी ने वही षोडश सोमवार व्रत कथा उनको सुनाई। स्वामी कार्तिकजी बोले कि इस व्रत को मैं भी करूंगा क्योंकि प्रियमित्र ब्राह्मण दुःखी दिल से परदेश गया है। हमें उससे मिलने की बहुत इच्छा है। कार्तिकेयजी ने भी इस व्रत को किया और उनका प्रिय मित्र मिल गया। मित्र ने इस आकस्मिक मिलन का भेद कार्तिकेयजी से पूछा तो वे बोले "हे मित्र! हमने तुम्हारे मिलने की इच्छा करके सोलह सोमवार का व्रत किया था। अब तो ब्राह्मण मित्र को भी अपने विवाह की बड़ी इच्छा हुई। कार्तिकेयजी से व्रत की विधि पूछी और यथाविधि व्रत किया। व्रत के प्रभाव से जब वह किसी कार्यवश विदेश गया तो वहां के राजा की लड़की का स्वयंवर था। राजा ने प्रण किया था कि जिस राजकुमार के गले में सब प्रकार श्रृंङ्गारित हथिनी माला डालेगी मैं उसी के साथ प्यारी पुत्री का विवाह कर दूंगा। शिवजी की कृपा से ब्राह्मण भी स्वयंवर देखने की इच्छा से राजसभा में एक ओर बैठ गया। नियत समय पर हथिनी आई और उसने जयमाला उस ब्राह्मण के गले में डाल दी। राजा की प्रतिज्ञा के अनुसार बड़ी

धूमधाम से कन्या का विवाह उस ब्राह्मण के साथ कर दिया और ब्राह्मण को बहुत-सा धन और सम्मान देकर संतुष्ट किया। ब्राह्मण सुन्दर राजकन्या पाकर सुख से जीवन व्यतीत करने लगा। एक दिन राजकन्या ने अपने पति से प्रश्न किया। हे प्राणनाथ! आपने ऐसा कौन-सा भारी पुण्य किया जिसके प्रभाव से हथिनी ने सब राजकुमारों को छोड़कर आपको वरण किया? ब्राह्मण बोला-"हे प्राणप्रिये! मैंने अपने मित्र कार्तिकेयजी के कथनानुसार सोलह सोमवार का व्रत किया था जिसके प्रभाव से मुझे तुम जैसी स्वरूपवान लक्ष्मी की प्राप्ति हुई। व्रत की महिमा को सुनकर राजकन्या को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह भी पुत्र की कामना करके व्रत करने लगी। शिवजी की दया से उसके गर्भ से एक अति सुन्दर सुशील धर्मात्मा और विद्वान पुत्र उत्पन्न हुआ। माता-पिता दोनों उस देव पुत्र को पाकर अति प्रसन्न हुए और उसका लालन-पालन भली प्रकार से करने लगे। जब पुत्र समझदार हुआ तो एक दिन अपने माता से प्रश्न किया कि मां तूने कौन-सा तप किया है जो मेरे जैसा पुत्र तेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ। माता ने पुत्र का प्रबल मनोरथ जान के अपने किए हुए सोलह सोमवार व्रत को विधि के सहित पुत्र के सम्मुख प्रकट किया। पुत्र ने ऐसे सरल

त... को सब तरह के मनोरथ पूर्ण करने वाला सुना तो वह भी इस व्रत का राज्याधिकार पाने की इच्छा से हर सोमवार को यथाविधि व्रत करने लगा। उसी समय एक देश के वृद्ध राजा के दूतों ने आकर उसको एक राजकन्या के लिए वरण किया। राजा ने अपनी पुत्री का विवाह ऐसे सर्वगुण सम्पन्न ब्राह्मण युवक के साथ करके बड़ा सुख प्राप्त किया। वृद्ध राजा के दिवंगत हो जाने पर यही ब्राह्मण बालक गद्दी पर बिठाया गया, क्योंकि दिवंगत भूप के कोई पुत्र नहीं था। राज्य का अधिकारी होकर भी वह ब्राह्मण पुत्र अपने सोलह सोमवार के व्रत को करा रहा। जब सत्रहवां सोमवार आया तो विप्र पुत्र ने अपनी प्रियतमा से सब पूजन सामग्री लेकर शिवालय में चलने के लिए कहा। परन्तु प्रियतमा ने उसकी आज्ञा की परवाह नहीं की। दास-दासियों द्वारा सब सामग्रियां शिवालय भिजवा दीं और आप नहीं गई। जब राजा ने शिवजी का पूजन समाप्त किया, तब एक आकाशवाणी राजा के प्रति हुई राजा ने सुना कि हे राजा! अपनी इस रानी को राजमहल से निकाल दे नहीं तो तेरा सर्वनाश कर देगी, वाणी को सुनकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा और तत्काल ही मंत्रणागृह में आकर अपने सभासदों को बुलाकर पूछने लगा कि हे

मंत्रियों! मुझे आज शिवजी की वाणी हुई है कि राजा तू अपनी इस रानी को निकाल दे नहीं तो ये तेरा सर्वनाश कर देगी। मंत्री आदि सब बड़े विस्मय और दुःख में डूब गये क्योंकि जिस कन्या के साथ राज मिला है राजा उसी को निकालने का जाल रचता है, यह कैसे हो सकेगा? अंत में राजा ने उसे अपने यहां से निकाल दिया। रानी दुःखी हृदय भाग्य को कोसती हुई नगर के बाहर हुई। बिना पदत्राण फटे वस्त्र पहने भूख से दुखी धीरे-धीरे चलकर एक नगर में पहुंची। वहां एक बुढ़िया सूत कातकर बेचने को जाती थी। रानी की करुण दशा देख बोली चल तू मेरा सूत बिकवा दे। मैं वृद्ध हूँ, भाव नहीं जानती हूँ। ऐसी बात बुढ़िया की सुन रानी ने बुढ़िया के सर से सूत की गठरी उतार अपने सर पर रखी, थोड़ी देर बाद आंधी आई और बुढ़िया का सूत पोटली के सहित उड़ गया। बेचारी बुढ़िया पछताती रह गई और रानी को अपने साथ से दूर रहने को कह दिया। अब रानी एक तेली के घर गई, तो तेली के सब मटके शिवजी के प्रकोप के कारण चटक गए। ऐसी दशा देख तेली ने रानी को अपने घर से निकाल दिया। इस प्रकार रानी अत्यंत दुख पाती हुई सरिता के तट पर गई तो सरिता का समस्त जल सूख गया। तत्पश्चात् रानी एक वन में गई,

वहां जाकर सरोवर में सीढ़ी से उतर पानी पीने को गई उसके हाथ से जल स्पर्श होते ही सरोवर का नीलकमल के सदृश्य जल असंख्य कीड़ामय गंदा हो गया। रानी ने भाग्य पर दोषारोपण करते हुए उस जल को पान करके पेड़ की शीतल छाया में विश्राम करना चाहा, वह रानी जिस पेड़ के नीचे जाती उस पेड़ के पत्ते तत्काल ही गिरते गये। वन सरोवर जल की ऐसी दशा देखकर गऊ चराते ग्वालों ने अपने गुसाईं जी से जो उस जंगल में स्थित मंदिर में पुजारी थे कही। गुसाईं जी के आदेशानुसार ग्वाले रानी को पकड़कर गुसाईं के पास ले गये। रानी की मुख कांति और शरीर शोभा देख गुसाईं जान गए। यह अवश्य ही कोई विधि की गति की मारी कोई कुलीन अबला है। ऐसा सोच पुजारी जी ने रानी के प्रति कहा कि पुत्री मैं तुमको पुत्री के समान रखूंगा। तुम मेरे आश्रम में ही रहो मैं तुम को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दूंगा। गुसाई के ऐसे वचन सुन रानी को धीरज हुआ और आश्रम में रहने लगी। परन्तु आश्रम में रानी जो भोजन बनाती उसमें कीड़े पड़ जाते, जल भरके लावे उसमें कीड़े पड़ जाते। अब तो गुसाईं जी भी दुःखी हुए और रानी से बोले कि हे बेटी! तेरे पर कौन से देवता का कोप है, जिससे तेरी ऐसी दशा है? पुजारी की बात

सुन रानी ने शिवजी की पूजा करने न जाने की कथा सुनाई तो पुजारी शिवजी महाराज अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए रानी के पति बोले कि पुत्री तुम सब मनोरथों के पूर्ण करने वाले सोलह सोमवार व्रत को करो उसके प्रभाव से अपने कष्ट से मुक्त हो सकोगी। गुसाईं की बात सुनकर रानी ने सोलह सोमवार व्रत को विधिवत् सम्पन्न किया और सत्रहवें सोमवार को पूजन के प्रभाव से राजा के हृदय में विचार उत्पन्न हुआ कि रानी को गए बहुत समय व्यतीत हो गया न जाने कहां-कहां भटकती होगी, ढूंढना चाहिए। यह सोच रानी को तलाश करने चारों दिशाओं में दूत भेजे। वे तलाश करते हुए पुजारी के आश्रम में रानी को पाकर पुजारी से रानी को मांगने लगे, परन्तु पुजारी ने उनसे मना कर दिया तो दूत चुपचाप लौटे और आकर महाराज के सन्मुख रानी का पता बतलाने लगे रानी का पता पाकर राजा स्वयं पुजारी के आश्रम में गये और पुजारी से प्रार्थना करने लगे कि महाराज! जो देवी जी आपके आश्रम में रहती है वह मेरी पत्नी है। शिवजी के कोप से मैंने इसको त्याग दिया था अब इस पर से शिव का प्रकोप शांत हो गया है। इसलिये मैं इसे लिवाने आया हूँ। आप इसे मेरे साथ चलने की आज्ञा दे दीजिए। गुसाईं जी ने राजा के वचन को

सत्य समझकर रानी को राजा के साथ जाने की आज्ञा दे दी। गुसाईं की आज्ञा पाकर रानी प्रसन्न होकर राजा के महल में आई, नगर में अनेक प्रकार के बधावे बजने लगे। नगर निवासियों ने नगर के दरवाजे पर तोरण बन्दनवारों से विविध-विधि से नगर सजाया। घर-घर में मंगल गान होने लगे, पंडितों ने विविध वेद मंत्रों का उच्चारण करके अपनी राज रानी का आवाहन किया। ऐसी अवस्था में रानी ने पुनः अपनी राजधानी में प्रवेश किया, महाराज ने अनेक तरह से ब्राह्मणों को दानादि देकर संतुष्ट किया। याचकों को धन-धान्य दिया। नगरी में स्थान-स्थान पर सदाव्रत खुलवाये। जहाँ भूखों को खाने को मिलता था। इस प्रकार से राजा शिवजी की कृपा का पात्र हो राजधानी में रानी के साथ अनेक तरह के सुखों का भोग करते सोमवार व्रत करने लगे। विधिवत् शिव पूजन करते हुए, लोक में अनेकानेक सुखों को भोगने के पश्चात् शिवपुरी को पधारे, ऐसे ही जो मनुष्य मनसा वाचा कर्मणा द्वारा भक्ति सहित सोमवार का व्रत पूजन इत्यादि वि[illegible] करता है वह इस लोक में समस्त सुखों को भोगकर अन्त में शिवपुरी को प्राप्त होता है। यह व्रत सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।

सोमवार की आरती

जय शिव ओंकारा जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥ टेक ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजै। हंसानन गुरुड़ासन बृषवाहन साजै ॥ जय ॥
दो भुज चारु चतुर्भुज दसभुज अति सोहे। तीनों रूप निखरते त्रिभुवन जन मोहे ॥ जय ॥
जय माला वन माला मुण्ड माला धारी। त्रिपुरारी कंसारी वर माला धारो ॥ जय ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥ जय ॥
कर में श्रेष्ठ कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता। जग-कर्ता जग-हर्ता जग पालन कर्ता ॥ जय ॥
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका ॥ जय ॥
जय गुण आरती शिव की जो कोई गावे। कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ॥ जय ॥

मंगलवार व्रत कथा की विधि

सर्व सुख, रक्त विकार, राज्य सम्मान तथा पुत्र की प्राप्ति के लिये मंगलवार का व्रत उत्तम है। इस व्रत में गेहूँ और गुड़ का ही भोजन करना चाहिए। भोजन दिन रात में एक बार ही ग्रहण करना ठीक है। व्रत २१ सप्ताह तक करें। मंगलवार के व्रत से मनुष्य के समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। व्रत के पूजन के समय लाल पुष्पों को चढ़ावें और लाल वस्त्र धारण करें। अन्त में हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार की कथा सुननी चाहिए।

मंगलवार व्रत की कथा

एक ब्राह्मण दम्पत्ति के कोई सन्तान न हुई थी, जिसके कारण पति-पत्नी दु:खी थे। वह ब्राह्मण हनुमान जी की पूजा हेतु वन में चला गया। वह पूजा के साथ महावीर जी से एक पुत्र की कामना प्रकट किया करता था। घर पर उसकी पत्नी मंगलवार व्रत पुत्र की प्राप्ति के लिए किया करती थी। मंगल के दिन व्रत के अंत भोजन बनाकर हनुमान जी को भोग लगाने के बाद स्वयं भोजन ग्रहण करती थी। एक बार कोई व्रत आ गया। जिसके कारण ब्राह्मणी भोजन न बना सकी तब हनुमान जी का भोग भी नहीं

लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मंगलवार को हनुमान जी को भोग लगाकर अन्न ग्रहण करूंगी। वह भूखी प्यासी छः दिन पड़ी रही। मंगलवार के दिन तो उसे मूर्छा आ गई तब हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गये। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहे- "मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ। मैं तुझको एक सुन्दर बालक देता हूँ। जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।" हनुमान जी मंगलवार को बाल रूप में उसको दर्शन देकर अंतर्धान हो गए। सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण वन से लौटकर आया। प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक घर में क्रीड़ा करते देखकर वह ब्राह्मण पत्नी से बोला- "यह बालक कौन है?" पत्नी ने कहा- "मंगलवार के व्रत से प्रसन्न हो हनुमान जी ने दर्शन दे मुझे बालक दिया है। पत्नी की बात छल से भरी जान उसने सोचा यह कुल्टा व्यभिचारिणी अपनी कलुषता छुपाने के लिए बात बना रही है। एक दिन उसका पति कुएँ पर पानी भरने चला तो पत्नी ने कहा कि मंगल को भी साथ ले जाओ। वह मंगल को साथ ले चला और उसको कुएँ में डालकर वापिस पानी भरकर घर आया तो पत्नी ने पूछा कि मंगल कहां है? तभी मंगल मुस्कुराता

हुआ घर आ गया। उसको देख ब्राह्मण आश्चर्य चकित हुआ, रात्रि में उसके पति से हनुमान जी ने स्वप्न में कहे-''यह बालक मैंने दिया है तुम पत्नी को कुल्टा क्यों कहते हो। पति यह जानकर हर्षित हुआ। फिर पति-पत्नी मंगल का व्रत रख अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करने लगे। जो मनुष्य मंगलवार व्रत कथा को पढ़ता या सुनता है और नियम से व्रत रखता है। उसके हनुमान जी की कृपा से सब कष्ट दूर होकर सर्व सुख प्राप्त होता है।

मंगलवार तथा मंगलिया की कथा

एक बुढ़िया थी, वह मंगल देवता को अपना इष्ट देवता मानकर सदैव मंगल का व्रत रखती और मंगलदेव का पूजन किया करती थी। उसका एक पुत्र था जो मंगलवार को उत्पन्न हुआ था। इस कारण उसको मंगलिया के नाम से बोला करती थी। मंगलदेव के दिन न तो घर को लीपती और न ही पृथ्वी खोदा करती थी। एक दिन मंगल देवता उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिये उसके घर में साधु का रूप बनाकर

आये और द्वार पर आवाज दी। बुढ़िया ने कहा महाराज क्या आज्ञा है? साधु कहने लगा कि बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा। यह सुनकर बुढ़िया ने कहा महाराज आज मंगलवार की व्रती हूँ इसलिये मैं चौका नहीं लगा सकती कहो तो जल का छिड़काव कर दूं। उस पर भोजन बना लें। साधु कहने लगा कि मैं गोबर से ही लिपे चौके पर खाना बनाता हूँ। बुढ़िया ने कहा पृथ्वी लीपने के सिवाय और कोई सेवा हो तो मैं सब कुछ करने के वास्ते उद्यत हूँ तब साधु ने कहा कि सोच समझ कर उत्तर दो जो कुछ भी मैं कहूँ सब तुमको करना होगा। बुढ़िया कहने लगी कि महाराज पृथ्वी लीपने के अलावा जो भी आज्ञा करेंगे। उसका पालन अवश्य करूंगी। बुढ़िया ने ऐसे तीन बार वचन दे दिया। तब साधु कहने लगा कि तू अपने लड़के को बुलाकर औंधा लिटा दे मैं उसकी पीठ पर भोजन बनाऊंगा। साधु की बात सुनकर बुढ़िया चुप हो गई। तब साधु ने कहा- "बुला ले लड़के को, अब सोच-विचार क्या करती है?" बुढ़िया मंगलिया, मंगलिया कहकर पुकारने लगी। थोड़ी देर बाद लड़का आ गया। बुढ़िया ने कहा- "जा बेटे तुझको बाबाजी बुलाते हैं।" लड़के ने बाबाजी से जाकर पूछा- "क्या

आज्ञा है महाराज?'' बाबाजी ने कहा कि जाओ अपनी माताजी को बुला लाओ। तब माता आ गई तो साधु ने कहा कि तू ही इसको लिटा दे। बुढ़िया ने मंगल देवता का स्मरण करते हुए लड़के को औंधा लिटा दिया और उसकी पीठ पर अंगीठी रख दी। कहने लगी कि महारज़ अब जो कुछ आपको करना है कीजिए, मैं जाकर अपना काम करती हूँ। साधु ने लड़के की पीठ पर रखी हुई अंगीठी में आग जलाई और उस पर भोजन बनाया। जब भोजन बन चुका तो साधु ने बुढ़िया से कहा कि अब अपने लड़के को बुलाओ वह भी आकर भोग ले जाये। बुढ़िया कहने लगी कि यह कैसे आश्चर्य की बात है कि उसकी पीठ पर आपने आग जलाई और उसी को प्रसाद के लिये बुलाते हैं। क्या यह सम्भव है कि अब भी आप उसको जीवित समझते हैं। आप कृपा करके उसका स्मरण भी मुझको न कराइए और भोग लगाकर जहाँ जाना हो जाइये। साधु के अत्यंत आग्रह करने पर बुढ़िया ने ज्यों ही मंगलिया कहकर आवाज लगाई त्यों ही एक ओर से दौड़ता हुआ आ गया। साधु ने लड़के को प्रसाद दिया और कहा कि माई तेरा व्रत सफल हो गया। तेरे हृदय में दया है और अपने इष्ट देव में अटल श्रद्धा है। इसके कारण तुमको कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचेगा।

अथ मंगलवार के व्रत की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दै बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सी कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाएं भुजा असुर संहारे। दाहिने भुजा संत जन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥

अथ बुधवार के व्रत की विधि

ग्रह शान्ति तथा सर्व-सुखों की इच्छा रखने वालों को बुधवार का व्रत करना चाहिए। इस व्रत में रात दिन में एक ही बार भोजन करना चाहिए। इस व्रत के समय हरी वस्तुओं का उपयोग करना श्रेष्ठ है। व्रत के अंत में शंकर जी की पूजा, धूप, बेल-पत्र आदि से करनी चाहिए। साथ ही बुधवार की कथा सुनकर आरती के बाद प्रसाद लेकर जाना चाहिए। बीच में ही नहीं जाना चाहिए।

अथ बुधवार व्रत की कथा प्रारम्भ

एक समय एक व्यक्ति अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। वहाँ पर कुछ दिन रहने के पश्चात् सास-ससुर से विदा करने के लिये कहा। किन्तु सबने कहा कि आज बुधवार का दिन है आज के दिन गमन नहीं करते हैं। वह व्यक्ति किसी प्रकार न माना और हठधर्मी करके बुधवार के दिन ही पत्नी को विदा कराकर अपने नगर को चल पड़ा। राह में उसकी पत्नी को प्यास लगी तो उसने अपने पति से कहा कि मुझे बहुत जोर से प्यास लगी है। तब वह व्यक्ति

लोटा लेकर रथ से उतरकर जल लेने चला गया। जैसे ही वह व्यक्ति पानी लेकर अपनी पत्नी के निकट आया तो वह यह देखकर आश्चर्य से चकित रह गया कि ठीक अपनी ही जैसी सूरत तथा वैसी ही वेश-भूषा में वह व्यक्ति उसकी पत्नी के पास रथ में बैठा हुआ है। उसने क्रोध से कहा कि तू कौन है जो मेरी पत्नी के निकट बैठा हुआ है। उसने कहा कि तू कौन है जो मेरी पत्नी के निकट बैठा हुआ है। दूसरा व्यक्ति बोला यह मेरी पत्नी है। मैं अभी-अभी ससुराल से विदा कराकर ला रहा हूँ। वे दोनों व्यक्ति परस्पर झगड़ने लगे। तभी राज्य के सिपाही आकर लोटे वाले व्यक्ति को पकड़ने लगे। स्त्री से पूछा, तुम्हारा असली पति कौन-सा है? तब पत्नी शांत ही रही क्योंकि दोनों एक जैसे थे वह किसे अपना असली पति कहे। वह व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ बोला- हे परमेश्वर यह क्या लीला है कि सच्चा झूठा बन रहा है। तभी आकाशवाणी हुई कि मूर्ख आज बुधवार के दिन तुझे गमन नहीं करना था। तूने किसी की बात नहीं मानी। यह सब लीला बुधदेव भगवान की है। उस व्यक्ति ने बुधदेव से प्रार्थना की और अपनी गलती के लिये क्षमा मांगी। तब

बुधदेव जी अन्तर्ध्यान हो गए। वह अपनी स्त्री को लेकर घर आया तथा बुधवार का व्रत वे दोनों पति-पत्नी नियमपूर्वक करने लगे। जो व्यक्ति इस कथा को श्रवण करता तथा सुनाता है उसको बुधवार के दिन यात्रा करने का कोई दोष नहीं लगता है, उसको सर्व प्रकार से सुखों की प्राप्ति होती है।

अथ बुधवार की आरती

आरती युगलकिशोर की कीजै। तन मन न्यौछावर कीजै॥ टेक॥
गौरश्याम मुख निरखन लीजै। हरि का स्वरूप नयन भरि पीजै॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा। ताहि निरिख मेरो मन लोभा॥
ओढ़े नील पीत पट सारी। कुंजबिहारी गिरिवरधारी॥
फूलन की सेज फूलन की माला। रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला॥
कंचनथार कपूर की बाती। हरि आए निर्मल भई छाती॥
श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरती करे सकल ब्रज नारी॥
नन्दनन्दन बृजभान किशोरी। परमानन्द स्वामी अविचल जोरी॥

अथ बृहस्पतिवार के व्रत की विधि

इस दिन बृहस्पतेश्वर महादेव जी की पूजा होती है। दिन में एक समय ही भोजन करें। पीले वस्त्र धारण करें, पीले पुष्पों को धारण करें। भोजन भी चने की दाल का होना चाहिए, नमक नहीं खाना चाहिए। पीले रंग का फूल, चने की दाल, पीले कपड़े तथा पीले चन्दन से पूजा करनी चाहिए। पूजन के पश्चात् कथा सुननी चाहिए। इस व्रत के करने से बृहस्पतिजी अति प्रसन्न होते हैं तथा धन और विद्या का लाभ होता है। स्त्रियों के लिए यह व्रत अति आवश्यक हैं। इस व्रत में केले का पूजन होता है।

अथ बृहस्पतिवार व्रत की कथा आरंभ

किसी गांव में एक साहूकार रहता था, जिसके घर में अन्न, वस्त्र और धन किसी की कोई कमी नहीं थी, परन्तु उसकी स्त्री बहुत ही कृपण थी। किसी भिक्षार्थी को कुछ नहीं देती, सारे दिन घर के कामकाज में लगी रहती। एक समय एक साधु-महात्मा बृहस्पतिवार के दिन उसके द्वार पर आये और भिक्षा की याचना की। स्त्री उस समय घर के आंगन को लीप रही थी, इस कारण

साधु महाराज से कहने लगी कि महाराज इस समय तो मैं घर लीप रही हूं आपको कुछ नहीं दे सकती, फिर किसी अवकाश के समय आना। साधु महात्मा खाली हाथ चले गए। कुछ दिन के पश्चात् वही साधु महाराज आये, उसी तरह भिक्षा मांगी। साहूकारनी उस समय लड़के को खिला रही थी। कहने लगी–महाराज मैं क्या करूँ अवकाश नहीं है, इसलिए आपको भिक्षा नहीं दे सकती। तीसरी बार महात्मा आए तो उसने उन्हें उसी तरह से टालना चाहा परन्तु महात्मा जी कहने लगे कि यदि तुमको बिल्कुल ही अवकाश हो जाए तो मुझको भिक्षा दोगी? साहूकारनी कहने लगी कि हाँ महाराज यदि ऐसा हो जाए तो आपकी बड़ी कृपा होगी। साधु–महात्मा जी कहने लगे कि अच्छा मैं एक उपाय बताता हूँ। तुम बृहस्पतिवार को दिन चढ़ने पर उठो और सारे घर में झाड़ू लगाकर कूड़ा एक कोने में जमा करके रख दो। घर में चौका इत्यादि मत लगाओ। फिर स्नान आदि करके घर वालों से कह दो, उस दिन सब हजामत अवश्य बनवायें। रसोई बनाकर चूल्हे के पीछे रखा करो, सामने कभी न रक्खो। सायंकाल को अन्धेरा होने के बाद दीपक जलाया करो तथा बृहस्पतिवार को पीले

वस्त्र मत धारण करो, न पीले रंग की चीजों का भोजन करो। यदि ऐसा करोगे तो तुमको घर का कोई काम नहीं करना पड़ेगा। साहूकारनी ने ऐसा ही किया। बृहस्पतिवार को दिन चढ़े उठी, झाड़ू लगाकर कूड़े को घर में जमा कर दिया। पुरुषों ने हजामत बनवाई। भोजन बनवाकर चूल्हे के पीछे रखा। वह सब बृहस्पतिवारों को ऐसा ही करती रही। अब कुछ काल बाद उसके घर में खाने को दाना न रहा। थोड़े दिनों में महात्मा फिर आए और भिक्षा मांगी परन्तु सेठानी ने कहा महाराज मेरे घर में खाने को अन्न नहीं है, आपको क्या दे सकती हूँ। तब महात्मा ने कहा कि जब तुम्हारे घर में सब कुछ था तब भी तुम कुछ नहीं देती थीं। अब पूरा-पूरा अवकाश है तब भी कुछ नहीं दे रही हो, तुम क्या चाहती हो वह कहो? तब सेठानी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की महाराज अब कोई ऐसा उपाय बताओ कि मेरे पहले जैसा धन-धान्य हो जाय। अब मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि अवश्यमेव जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूंगी। तब महात्माजी ने कहा-"बृहस्पतिवार को प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त हो घर को गौ के गोबर से लीपो तथा घर के पुरुष हजामत न बनवायें। भूखों को अन्न-

जल देती रहा करो। ठीक सायंकाल दीपक जलाओ। यदि ऐसा करोगी तो तुम्हारी सब मनोकामनाएं भगवान् बृहस्पतिजी की कृपा से पूर्ण होगी। सेठानी ने ऐसा ही किया और उसके घर में धन-धान्य वैसा ही हो गया जैसा कि पहले था। इस प्रकार भगवान बृहस्पतिजी की कृपा से अनेक प्रकार के सुख भोगकर दीर्घकाल तक जीवित रहीं।

अथ बृहस्पतिवार की दूसरी कथा

एक दिन इन्द्र बड़े अहंकार से अपने सिंहासन पर बैठे थे और बहुत से देवता, ऋषि, गन्धर्व, किन्नर आदि सभा में उपस्थित थे। जिस समय बृहस्पतिजी वहां पर आए तो सबके सब उनके सम्मान के लिए खड़े हो गए परन्तु इन्द्र गर्व के मारे खड़ा न हुआ, यद्यपि वह सदैव उनका आदर किया करता था। बृहस्पतिजी अपना अनादर समझते हुए वहां से उठकर चले गये। तब इन्द्र को बड़ा शोक हुआ कि देखो मैंने गुरुजी का अनादर कर दिया, मुझ से बड़ी भारी भूल हो गई। गुरुजी के आशीर्वाद

से ही मुझको यह वैभव मिला है। उनके क्रोध से यह सब नष्ट हो जायेगा। इसलिये उनके पास जाकर उनसे क्षमा मांगनी चाहिए। जिससे उनका क्रोध शान्त हो जाए और मेरा कल्याण होवे। ऐसा विचार कर इन्द्र उनके स्थान पर गये। जब बृहस्पतिजी ने अपने योगबल से यह जान लिया कि इन्द्र क्षमा मांगने के लिये यहां आ रहा है तब क्रोधवश उससे भेंट करना उचित न समझकर अन्तर्ध्यान हो गए। जब इन्द्र ने बृहस्पतिजी को घर पर न देखा तब निराश होकर लौट आए। जब दैत्यों के राजा वृषवर्मा को यह समाचार विदित हुआ तो उसने अपने गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से इन्द्रपुरी को चारों तरफ से घेर लिया। गुरु की कृपा न होने के कारण देवता हारने व मार खाने लगे। तब उन्होंने ब्रह्माजी को विनयपूर्वक सब वृत्तांत सुनाया और कहा कि महाराज दैत्यों से किसी प्रकार बचाइए। तब ब्रह्माजी कहने लगे कि तुमने बड़ा अपराध किया है जो गुरुदेव को क्रोधित कर दिया। अब तुम्हारा कल्याण इसी में हो सकता है कि त्वष्टा ब्राह्मण का पुत्र विश्वरूपा बड़ा तपस्वी और ज्ञानी है। उसे अपना पुरोहित बनाओ तो तुम्हारा कल्याण हो सकता है। यह वचन सुनते ही इन्द्र त्वष्टा के पास गये और बड़े विनीत भाव से त्वष्टा से कहने लगे कि आप हमारे पुरोहित बनिये, जिससे

हमारा कल्याण हो। तब त्वष्टा ने उत्तर दिया कि पुरोहित बनने से तपोबल घट जाता है परन्तु तुम बहुत बिनती करते हो, इसलिए मेरा पुत्र विश्वरूपा पुरोहित बनकर तुम्हारी रक्षा करेगा। विश्वरूपा ने पिता की आज्ञा से पुरोहित बनकर ऐसा यत्न किया कि हरि इच्छा से इन्द्र वृषवर्मा को युद्ध में जीतकर अपने इन्द्रासन पर स्थित हुआ। विश्वरूपा के तीन मुख थे। एक मुख से वह सोमपल्ली लता का रस निकाल पीते थे। दूसरे मुख से वह मदिरा पीते और तीसरे मुख से अन्नादि भोजन करते। इन्द्र ने कुछ दिनों उपरान्त कहा कि मैं आपकी कृपा से यज्ञ करना चाहता हूं। जब विश्वरूपा की आज्ञानुसार यज्ञ प्रारम्भ हो गया तब एक दैत्य ने विश्वरूपा से कहा कि तुम्हारी माता दैत्य की कन्या है। इस कारण हमारे कल्याण के निमित्त एक आहुती दैत्यों के नाम पर भी दे दिया करो तो अति उत्तम बात है। विश्वरूपा उस दैत्य का कहा मानकर आहुति देते समय दैत्य नाम भी धीरे से लेने लगा। इसी कारण यज्ञ करने से देवताओं का तेज नहीं बढ़ा। इन्द्र ने यह वृतांत जानते ही क्रोधित होकर विश्वरूपा के तीन सर काट डाले। मद्यपान करने से भंवरा, सोमपल्ली पीने से कबूतर और अन्न खाने से मुख से तीतर बन गया। विश्वरूपा के मरते ही इन्द्र का स्वरूप ब्रह्महत्या के प्रभाव

से बदल गया। देवताओं के एक वर्ष पश्चाताप करने पर भी ब्रह्महत्या का वह पाप न छूटा तो सब देवताओं के प्रार्थना करने पर ब्रह्माजी बृहस्पतिजी के सहित वहां आए। उस ब्रह्महत्या के चार भाग किये। उनमें से एक भाग पृथ्वी को दिया इसी कारण कहीं-कहीं धरती ऊँची-नीची और बीज बोने के लायक भी नहीं होती। साथ ही ब्रह्माजी ने यह वरदान दिया जहां पृथ्वी में गड्ढा होगा, कुछ समय पाकर स्वयं भर जाएगा। दूसरा वृक्षों को दिया जिससे उनमें से गोंद बनकर बहता है। इस कारण गूगल के अतिरिक्त सब गोंद अशुद्ध समझे जाते हैं। वृक्षों को यह वरदान दिया कि ऊपर से सूख जाने पर जड़ फिर फूट जाती है। तीसरा भाग स्त्रियों को दिया, इसी कारण स्त्रियाँ हर महीने रजस्वला होकर पहले दिन चांडालनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, तीसरे दिन धोबिन के समान रहकर चौथे दिन शुद्ध होती हैं और सन्तान प्राप्ति का उनको वरदान दिया। चौथा भाग जल को दिया जिससे फेन और सिवाल आदि जल के ऊपर आ जाते हैं। जल को यह वरदान मिला कि जिस चीज में डाला जाएगा, वह बोझ में बढ़ जायेगी। इस प्रकार इन्द्र को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त किया। जो मनुष्य इस कथा को पढ़ता या सुनता है उसके सब पाप बृहस्पतिजी महाराज की कृपा से नष्ट होते हैं।

अथ बृहस्पतिवार की आरती

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा। छिन छिन भोग लगाऊं फल मेवा ॥ॐ॥

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। जगत पिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥

चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता। सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥

तन, मन, धन अर्पणकर जो शरण पड़े। प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े ॥ॐ॥

दीन दयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी। पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हारी ॥ॐ॥

सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारो। विषय विकार मिटाओ सन्तन सुखकारी ॥ॐ॥

जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे। जेष्टानन्द बन्द सो सो निश्चय पावे ॥ॐ॥

सब बोलो विष्णु भगवान की जय। बोलो बृहस्पति देव भगवान की जय॥

सन्तोषी माता व्रत की विधि

इस व्रत को करने वाला कथा कहते व सुनते समय हाथ में गुड़ व भुने चने रखें, सुनने वाला सन्तोषी माता की जय! सन्तोषी माता की जय! मुख से बोलते जायें। कथा समाप्त होने पर हाथ का गुड़ चना गौ माता को खिलावें। कलश में रखा हुआ गुड़ चना सबको प्रसाद के रूप में बांट दें, कथा से पहले कलश को जल से भरें उसके ऊपर गुड़ चने से भरा कटोरा रखें कथा समाप्त होने और आरती होने के बाद कलश के जल को घर में सब जगह छिड़कें और बचा हुआ जल तुलसी की क्यारी में डाल देवें। व्रत के उद्यापन में अढ़ाई सेर खाजा मोमनदार पूड़ी, खीर, चने का शाक, नैवेद्य रखें, घी का दीपक जला संतोषी माता की जय जयकारा बोल नारियल फोड़ें। इस दिन घर में कोई खटाई न खावे और न आप खावे न किसी दूसरे को खाने दे इस दिन ८ लड़कों को भोजन करावे, देवर जेठ घर कुटुम्ब के लड़के मिलते हो तो दूसरों को बुलाना नहीं। कुटुम्ब में न मिले तो ब्राह्मणों के रिश्तेदारों या पड़ोसियों के लड़के बुलावें। उन्हें खटाई की कोई वस्तु न दें तथा भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा देवें।

सन्तोषी माता की कथा आरम्भ

एक बुढ़िया थी और उसके सात पुत्र थे, छः कमाने वाले थे, एक निकम्मा था। बुढ़िया मां छहों पुत्रों की रसोई बनाती, भोजन कराती और पीछे से जो कुछ बचता सो सातवें को दे देती थी। परन्तु वह बड़ा भोला-भाला था, मन में कुछ विचार न करता था। एक दिन अपनी बहू से बोला- देखो! मेरी माता का मुझ पर कितना प्यार है। वह बोली-क्यों नहीं, सबका जूठा बचा हुआ तुमको खिलाती है। वह बोला-भला ऐसा भी कहीं हो सकता है, मैं जब तक आँखों से न देखूं, मान नहीं सकता। बहू ने हँसकर कहा- तुम देख लोगे तब तो मानोगे। कुछ दिन बाद बड़ा त्यौहार आया। घर में सात प्रकार के भोजन और चूरमा के लड्डू बने। वह जांचने को सिर-दर्द का बहाना कर पतला कपड़ा सिर पर ओढ़कर रसोई घर में सो गया और कपड़े में से सब देखता रहा। छहो भाई भोजन करने आये, उसने देखा माँ ने उनके लिए सुन्दर-सुन्दर आसन बिछाये हैं, सात प्रकार की रसोई

परोसी है, वह आग्रह करके जिमाती है, वह देखता रहा। छहो भाई भोजन कर उठे तब माता ने उनकी जूठी थालियों में से लड्डुओं के टुकड़ों को उठाया और एक लड्डू बनाया, जूठन साफकर बुढ़िया माँ ने पुकारा-उठो बेटा! छहों भाई भोजन कर गये अब तू ही बाकी है, उठ न, कब खायेगा? वह कहने लगा-माँ, मुझे भोजन नहीं करना। मैं परदेश जा रहा हूँ। माता ने कहा- कल जाता हो तो आज ही जा। वह बोला-हां-हां, आज ही जा रहा हूं। यह कहकर वह घर से निकल गया। चलते समय बहू की याद आई, वह गोशाला में कपड़े थाप रही थी, वहीं जाकर उससे बोला-

दोहा-हम जावें परदेश को आवेंगे कुछ काल। तुम रहियो संतोष से धरम आपनो पाल॥
वह बोली जाओ पिया आनंद से हमरुं सोच हटाय। राम भरोसे हम रहें ईश्वर तुम्हें सहाय॥
देख निशानी आपनी देख धरूँ मैं धीर। सुधि हमरी मती बिसारियो रखियो मन गंभीर॥

वह बोला-मेरे पास तो कुछ नहीं, यह अंगूठी है सो ले और अपनी कुछ निशानी मुझे दे। वह बोली-मेरे पास क्या है यह गोबर भरा हाथ है। यह कहकर उसकी पीठ में गोबर के हाथ की

थाप मार दी। वह चल दिया। चलते-चलते दूर देश में पहुंचा।

वहां पर एक साहूकार की दुकान थी, वहां जाकर कहने लगा-भाई मुझे नौकरी पर रख लो। साहूकार को जरूरत थी, बोला-रह जा। लड़के ने पूछा-तनखा क्या दोगे? साहूकार ने कहा-काम देखकर दाम मिलेंगे। साहूकार की नौकरी मिली, वह सवेरे सात बजे से रात तक नौकरी बजाने लगा। कुछ दिनों में दुकान का सारा लेन-देन, हिसाब-किताब, ग्राहकों को माल बेचना, सारा काम करने लगा। साहूकार के ७-८ नौकर थे, वे सब चक्कर खाने लगे कि यह तो बहुत होशियार बन गया है। सेठ ने भी काम देखा और ३ महीने में उसे आधे मुनाफे का साझीदार बना लिया। वह १२ वर्ष में ही नामी सेठ बन गया और मालिक सारा कारोबार उस पर छोड़कर बाहर चला गया। अब बहू पर क्या बीती सो सुनो। सास-ससुर उसे दुःख देने लगे। सारी गृहस्थी का काम करके उसे लकड़ी लेने जंगल में भेजते। इस बीच घर की रोटियों के आटे से जो भूसी निकलती उसकी रोटी बनाकर रख दी जाती और फूटे नारियल के खोपरे में पानी। इस तरह दिन बीतते रहे। एक

दिन वह लकड़ी लेने जा रही थी कि रास्ते में बहुत-सी स्त्रियाँ संतोषी माता का व्रत करती दिखाई दीं। वह वहाँ खड़ी हो कथा सुनकर बोली- बहिनो! यह तुम किस देवता का व्रत करती हो और इसके करने से क्या फल मिलता है? इस व्रत के करने की क्या विधि है? यदि तुम अपने व्रत का विधान मुझे समझाकर कहोगी तो मैं तुम्हारा अहसान मानूंगी।

तब उनमें से एक स्त्री बोली-सुनो यह संतोषी माता का व्रत है, इसके करने से निर्धनता, दरिद्रता का नाश होता है, लक्ष्मी आती है। मन की चिंतायें दूर होती हैं। घर में सुख होने से मन को प्रसन्नता और शांति मिलती है। निःपुत्र को पुत्र मिलता है, प्रीतम बाहर गया हो तो जल्दी आवे। क्वांरी कन्या को मनपसन्द वर मिले, राजद्वारे में बहुत दिनों से मुकदमा चलता हो तो खत्म हो जावे, सब तरह सुख-शान्ति हो, घर में धन जमा हो, पैसा-जायदाद का लाभ हो, रोग दूर हो जावे तथा और जो कुछ मन में कामना हो, वे सब इस संतोषी माता की कृपा से पूरी हो जावें, इसमें संदेह नहीं। वह पूछने लगी-यह व्रत कैसे किया जावे यह भी बताओ तो बड़ी कृपा होगी। स्त्री कहने लगी-

'सवा रुपये का गुड़ चना लेना, इच्छा हो तो सवा पाँच रुपये का लेना या सवा ग्यारह रुपये का भी सहूलियत अनुसार लेना बिना परेशानी, श्रद्धा और प्रेम से जितना बन सके सवाया लेना। सवा रुपये से सवा पांच रुपये तथा इससे भी ज्यादा शक्ति और भक्ति अनुसार लें। हर शुक्रवार को निराहार रह, कथा कहना-सुनना, इसके बीच क्रम टूटे नहीं, लगातार नियम पालन करना। सुनने वाला कोई न मिले तो घी का दीपक जला, उसके आगे जल के पात्र को रख कथा कहना परन्तु नियम न टूटे। जब तक कार्य सिद्ध न हो, नियम पालन करना और कार्य सिद्ध हो जाने पर ही व्रत का उद्यापन करना, तीन मास में माता फल पूरा करती है। यदि किसी के खोटे ग्रह हों तो भी माता एक वर्ष में अवश्य कार्य को सिद्ध करती हैं। कार्य सिद्ध होने पर ही उद्यापन करना चाहिए बीच में नहीं। उद्यापन में अढ़ाई सेर आटे का खाजा तथा इसी परिमाण से खीर तथा चने का साग करना। आठ लड़कों को भोजन कराना, जहां तक मिलें, देवर-जेठ, भाई-बन्धु, कुटुम्ब के लड़के लेना, न मिलें तो रिश्तेदारों और पड़ोसियों के लड़के बुलाना, उन्हें भोजन कराना, यथाशक्ति दक्षिणा

दे माता का नियम पूरा करना, उस दिन घर में कोई खटाई न खावे।

यह सुनकर बुढ़िया के लड़के की बहू चल दी। रास्ते में लकड़ी के बोझ को बेच दिया और उन पैसों से गुड़-चना ले माता के व्रत की तैयारी कर आगे चली और सामने मंदिर देख पूछने लगी- यह मंदिर किसका है? सब कहने लगे-संतोषी माता का मंदिर है। यह सुन माता के मंदिर में जा माता के चरणों में लोटने लगी। दीन होकर विनती करने लगी-'माँ! मैं निपट मूर्ख हूं व्रत के नियम कुछ नहीं जानती। मैं बहुत दुःखी हूँ! हे माता जगजननी! मेरा दुःख दूर कर, मैं तेरी शरण में हूँ' माता को दया आई। एक शुक्रवार बीता कि दूसरे शुक्रवार को ही इसके पति का पत्र आया और तीसरे को उसका भेजा हुआ पैसा भी आ पहुंचा। यह देख जेठानी मुँह सिकोड़ने लगी-इतने दिनों में पैसा आया, इसमें क्या बड़ाई है। लड़के ताने देने लगे-काकी के पास अब पत्र आने लगे, रुपया आने लगा, अब तो काकी की खातिर बढ़ेगी, अब तो काकी बुलाने से भी नहीं बोलेगी।

बेचारी सरलता से कहती-भैया! पत्र आवे, रुपया आवे तो हम सबके लिए अच्छा है। ऐसा

कहकर आंखों में आँसू भरकर संतोषी माता के मन्दिर में आ मातेश्वरी के चरणों में गिरकर रोने लगी–मां! मैंने तुमसे पैसा नहीं मांगा। मुझे पैसे से क्या काम है? मुझे तो अपने सुहाग से काम है। मैं तो अपने स्वामी के दर्शन और सेवा मांगती हूं। तब माता ने प्रसन्न होकर कहा–जा बेटी, तेरा स्वामी आयेगा। यह सुन खुशी से बावली हो घर में जा काम करने लगी। अब संतोषी माँ विचार करने लगी–इस भोली पुत्री से मैंने कह तो दिया तेरा पति आवेगा, पर आवेगा कहां से? वह तो स्वप्न में भी इसे याद नहीं करती, उसे याद दिलाने मुझे जाना पड़ेगा। इस तरह माता बुढ़िया के बेटे के पास जा स्वप्न में प्रकट हो कहने लगी–साहूकार के बेटे! सोता है या जागता है? वह बोला–माता! सोता भी नहीं हूँ जागता भी नहीं हूँ, बीच में ही हूँ, कहो क्या आज्ञा है? मां कहने लगी–तेरा घर-बार कुछ है या नहीं? वह बोला–मेरा सब कुछ है माता। मां–बाप, भाई–बहिन, बहू, क्या कमी है? मां बोली–भोले पुत्र! तेरी स्त्री घोर कष्ट उठा रही है। मां–बाप उसे दुःख दे रहे हैं, वह तेरे लिए तरस रही है, तू उसकी सुधि ले। वह बोला–हां माता, यह तो मुझे मालूम है परन्तु मैं जाऊं तो जाऊं

कैसे? परदेश की बात है, लेन-देन का कोई हिसाब नहीं, कोई जाने का रास्ता नजर नहीं आता, कैसे चला जाऊं? मां कहने लगी-मेरी बात मान, सवेरे नहा-धोकर संतोषी माता का नाम ले, घी का दीपक जला, दण्डवत् कर दुकान पर जा बैठना, देखते-देखते तेरा लेन-देन सब चुक जायेगा, जमा माल बिक जायेगा, सांझ होते-होते धन का ढेर लग जायेगा।

जब सवेरे बहुत जल्दी उठ उसने लोगों से अपने सपने की बात कही तो वे सब उसकी बात अनसुनी कर दिल्लगी उड़ाने लगे कहीं सपने भी सच होते हैं? एक बूढ़ा बोला-देख भाई मेरी बात मान, इस प्रकार सांच झूठ करने के बदले देवता ने जैसा कहा है वैसा ही करने में तेरा क्या जाता है? वह बूढ़े की बात मान, स्नान कर संतोषी माँ को दण्डवत् कर घी का दीपक जला, दुकान पर जा बैठा। थोड़ी देर में वह क्या देखता है कि देने वाले रुपया लाये, लेने वाले हिसाब लेने लगे, कोठे से भरे सामानों के खरीददार नकद दाम में सौदा करने लगे, शाम तक धन का ढेर लग गया। माता का चमत्कार देख प्रसन्न हो मन में माता का नाम ले, घर ले जाने के वास्ते गहना, कपड़ा

खरीदने लगा और वहाँ के काम से निपट वह घर को रवाना हुआ। वहाँ बहू बेचारी जंगल में लकड़ी लेने जाती है, लौटते वक्त मां के मन्दिर पर विश्राम करती है। वह तो उसका रोजाना रुकने का स्थान था। दूर से धूल उड़ती देख वह माता से पूछती है-हे माता! यह धूल कैसी उड़ रही है? माँ कहती है-हे पुत्री! तेरा पति आ रहा है। अब तू ऐसा कर, लकड़ियों के तीन बोझ बना ला, एक नदी किनारे रख, दूसरा मेरे मंदिर पर और तीसरा अपने सिर पर रख, तेरे पति को लकड़ी का गट्ठा देखकर मोह पैदा होगा। वह वहाँ रुकेगा, नाश्ता-पानी बना-खाकर माँ से मिलने जायेगा, तब तू लकड़ियों का बोझ उठाकर घर जाना और बीच चौक में गट्ठा डालकर तीन आवाजें जोर से लगाना- लो सासूजी! लकड़ियों का गट्ठा लो, भूसी की रोटी दो और नारियल के ख़ोपरे में पानी दो, आज कौन मेहमान आया है?

माँ की बात सुन, बहू 'बहुत अच्छा माता! कहकर प्रसन्न हो लकांड़यों के तीन गट्ठे ले आई। एक नदी तट पर, एक माता के मंदिर पर रखा, इतने में ही एक मुसाफिर आ पहुंचा। सूखी लकड़ी

देख उसकी इच्छा हुई कि अब यहीं विश्राम करे और भोजन बना-खाकर गांव जाये। इस प्रकार भोजन बना विश्राम कर, वह गाँव को गया। सबसे प्रेम से मिला, उसी समय बहू सिर पर लकड़ी का गट्ठा लिये आती है। लकड़ी का भारी बोझ आंगन में डाल, जोर से तीन आवाज देती है-लो सासूजी! लकड़ी का गट्ठा लो, भूसी की रोटी दो, नारियल के खोपरे में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है? यह सुनकर सास बाहर आ, अपने दिए हुए कष्टों को भुलाते हुए कहती है-बहू! ऐसा क्यों कहती है, तेरा मालिक ही तो आया है। आ बैठ, मीठा भात खा, भोजन कर, कपड़े-गहने पहिन। इतने में आवाज सुन उसका स्वामी बाहर आता है और अंगुठी देख व्याकुल हो, मां से पूछता है-मां! यह कौन है? मां कहती है-बेटा! यह तेरी बहू है, आज बारह वर्ष हो गए तू जब से गया है तब से सारे गाँव में जानवर की तरह भटकती फिरती है। काम-काज घर का कुछ करती नहीं, चार समय आकर खा जाती है। अब तुझे देखकर भूसी की रोटी और नारियल के खोपरे में पानी मांगती है।

वह लज्जित हो बोला-ठीक है माँ! मैंने इसे भी देखा है और तुम्हें भी देखा है। अब मुझे दूसरे घर की ताली दो तो उसमें रहूं। तब माँ बोली-ठीक है बेटा! तेरी जैसी मर्जी, कहकर ताली का गुच्छा पटक दिया। उसने ताली ले दूसरे कमरे में जो तीसरी मंजिल के ऊपर था, खोलकर सारा सामान जमाया। एक दिन में ही वहाँ राजा के महल जैसा ठाट-बाट बन गया। अब क्या था, वे दोनों सुखपूर्वक रहने लगे। इतने में अगला शुक्रवार आया। बहू ने अपने पति से कहा कि मुझे माता का उद्यापन करना है। पति बोला-बहुत अच्छा, खुशी से करो। वह तुरन्त ही उद्यापन की तैयारी करने लगी। जेठ के लड़कों को भोजन के लिए कहने गई। उसने मंजूर किया परन्तु पीछे जेठानी अपने बच्चों को सिखलाती है-देखो रे! भोजन के समय सब लोग खटाई मांगना, जिससे उसका उद्यापन पूरा न हो। लड़के जीमने आये, खीर पेट भरकर खाई। परन्तु याद आते ही कहने लगे-हमें कुछ खटाई दो, खीर खाना हमें भाता नहीं, देखकर अरुचि होती है। बहू कहने लगी-खटाई किसी को नहीं दी जायेगी, यह तो संतोषी माता का प्रसाद है। लड़के तुरन्त उठ खड़े हुए, बोले पैसा लाओ।

भोली बहू कुछ जानती नहीं थी सो उन्हें पैसे दे दिये । लड़के उसी समय जा करके इमली ला खाने लगे । यह देखकर बहू पर माताजी ने कोप किया । राजा के दूत उसके पति को पकड़कर ले गये । जेठ-जिठानी मनमाने खोटे वचन कहने लगे-लूट-लूटकर धन इकट्ठा कर लाया था सो राजा के दूत पकड़कर ले गये । अब सब मालूम पड़ जायेगा जब जेल की हवा खायेगा । बहू से यह वचन सहन नहीं हुए । रोती-रोती माता के मंदिर में गई । हे माता! तुमने यह क्या किया? हँसाकर अब क्यों रुलाने लगी । माता बोली-पुत्री! तूने उद्यापन करके मेरा व्रत भंग किया है, इतनी जल्दी सब बातें भुला दीं । वह कहने लगी-माता भूली तो नहीं हूं, न कुछ अपराध किया है, मुझे तो लड़कों ने भूल में डाल दिया । मैंने भूल से उन्हें पैसे दे दिये, मुझे क्षमा कर दो मां! माँ बोली ऐसी भी कहीं भूल होती है? वह बोली-मां मुझे माफ कर दो, मैं फिर तुम्हारा उद्यापन करूंगी । मां बोली-अब भूल मत करना । वह बोली-अब न होगी, मां अब बतलाओ वह कैसे आवेंगे?

माँ बोली-जा पुत्री! तेरा पति तुझे रास्ते में ही आता मिलेगा । वह घर को चली । राह में पति

आता मिला। उसने पूछा-तुम कहां गये थे? तब वह कहने लगा-इतना धन कमाया है, उसका टैक्स राजा ने मांगा था, वह भरने गया था। वह प्रसन्न हो बोली-भला हुआ, अब घर चलो। कुछ दिन बाद फिर शुक्रवार आया। वह बोली मुझे माता का उद्यापन करना है। पति ने कहा-करो। वह फिर जेठ के लड़कों से भोजन को कहने गई। जेठानी ने तो एक-दो बातें सुनाई और लड़कों को सिखा दिया कि तुम पहले ही खटाई मांगना। लड़के कहने जगे-हमें खीर खाना नहीं भाता, जी बिगड़ता है, कुछ खटाई खाने को देना। वह बोली-खटाई खाने को नहीं मिलेगी, आना हो तो आओ। वह ब्राह्मणों के लड़के ला भोजन कराने लगी। यथाशक्ति दक्षिणा की जगह एक-एक फल उन्हें दिया। इससे संतोषी माता प्रसन्न हुई। माता की कृपा होते ही नवें मास उसको चन्द्रमा के समान सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्र को लेकर प्रतिदिन माता जी के मन्दिर में जाने लगी। मां ने सोचा कि यह रोज आती है, आज क्यों न मैं ही इसके घर चलूं। इसका आसरा देखूं तो सही। यह विचार कर माता ने भयानक रूप बनाया। गुड़ और चने से सना मुख, ऊपर सूंड के समान होंठ, उस पर मक्खियां भिन-भिना

रही थीं। देहलीज में पाँव रखते ही उसकी सास चिल्लाई-देखो रे! कोई चुड़ैल डाकिन चली आ रही है। लड़कों इसे भगाओ, नहीं तो किसी को खा जायेगी। लड़के डरने लगे और चिल्लाकर खिड़की बंद करने लगे। बहु रोशनदान में से देख रही थी, प्रसन्नता से पगली होकर चिल्लाने लगी- आज मेरी माता जी मेरे घर आई हैं। यह कहकर बच्चे को दूध पिलाने से हटाती है। इतने में सास का क्रोध फूट पड़ा। बोली-रांड! इसे देखकर कैसी उतावली हुई है जो बच्चे को पटक दिया। इतने में माँ के प्रताप से जहाँ देखो वहीं लड़के ही लड़के नजर आने लगे। वह बोली-माँ जी, मैं जिनका व्रत करती हूँ यह वही संतोषी माता हैं। इतना कह झट से सारे घर के किवाड़ खोल देती है। सबने माता के चरण पकड़ लिये और विनती कर कहने लगे-हे माता! हम मूर्ख हैं, हम अज्ञानी हैं पापी है। तुम्हारे व्रत की विधि हम नहीं जानते, तुम्हारा व्रत भंग कर हमने बहुत बड़ा अपराध किया है। हे माता! आप हमारा अपराध क्षमा करो। इस प्रकार माता प्रसन्न हुई। माता ने बहू को जैसा फल दिया वैसा सबको दे। जो पढ़े उसका मनोरथ पूर्ण हो। बोलो संतोषी माता की जय!

संतोषी माता जी की आरती

जय संतोषी माता जय संतोषी माता। अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता ॥ जय॰
सुन्दर चीर सुनहरी मां धारण कीन्हों। हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हों ॥ जय॰
गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे। मन्द हंसत करुणामयी त्रिभुवनजन मोहे ॥ जय॰
स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर ढुरे प्यारे। धूप, दीप, नैवेद्य, मधुमेवा भोग धरे न्यारे ॥ जय॰
गुड़ अरू चना परमप्रिय तामें संतोष कियो। संतोषी कहलाई भक्तन वैभव दियो ॥ जय॰
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही। भक्त मण्डली आई कथा सुनत मोही ॥ जय॰
मंदिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई। विनय करें हम बालक चरनन सिर नाई ॥ जय॰
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजे। जो मन बसे हमारे इच्छा फल दीजे ॥ जय॰
दुःखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये। बहु धन धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये ॥ जय॰
ध्यान धरो जाने तेरो मनवांछित फल पायो। पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो ॥ जय॰
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे। संकट तू ही निवारे दयामयी माँ अम्बे ॥ जय॰
संतोषी मां की आरती जो कोई नर गावे। ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पत्ति जी भरके पावे ॥ जय॰

शनिवार के व्रत की विधि

इस दिन शनि की पूजा होती है। काला तिल, काला वस्त्र, तेल, उड़द शनि को बहुत प्रिय है, इसलिए इनके द्वारा शनि की पूजा होती है। शनि की दशा को दूर करने के लिए यह व्रत किया जाता है। शनि स्त्रोत का पाठ भी विशेष लाभदायक सिद्ध होता है।

अथ शनिवार व्रत कथा

एक समय सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन ग्रहों में आपस में झगड़ा हो गया कि हम सब में सबसे बड़ा कौन है? सब अपने आप को बड़ा कहते थे। जब आपस में कोई निश्चय न हो सका तो सब के सब आपस में झगड़ते हुए इन्द्र के पास गए और कहने लगे कि आप सब देवताओं के राजा हो, इसलिए आप हमारा न्याय करके बतलाओ कि हम नवों ग्रहों

में सबसे बड़ा कौन है? राजा इन्द्र इनका प्रश्न सुनकर घबरा गये और कहने लगे कि मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है जो किसी को बड़ा या छोटा बतलाऊं। मैं अपने मुख से कुछ नहीं कह सकता हूं। हाँ एक उपाय हो सकता है। इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य दूसरों के दुःखों का निवारण करने वाला है। इसलिये तुम सब मिलकर उन्हीं के पास जाओ। वही तुम्हारे दुःखों का निवारण करेंगे। ऐसा वचन सुनकर सभी ग्रह देवता चलकर भूलोक में राजा विक्रमादित्य की सभा में जाकर उपस्थित हुए और अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा उनकी बात सुनकर बड़ी चिन्ता में पड़ गये कि मैं अपने मुख से किसको बड़ा और किसको छोटा बतलाऊं। जिसको छोटा बतलाऊँगा वही क्रोध करेगा परन्तु उनका झगड़ा निपटाने के लिए एक उपाय सोचा कि सोना, चांदी, कांसा, पीतल, शीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक और लोहा नवों धातुओं के नौ आसन बनवाये। सब आसनों को क्रम से जैसे सोना सबसे पहले और लोहा सबसे पीछे बिछाये गये। इसके पश्चात् राजा ने सब ग्रहों से कहा कि आप सब अपने-अपने सिंहासनों पर बैठिए, जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे

बड़े और जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिये क्योंकि लोहा सबसे पीछे था और वह शनिदेव का आसन था इसलिए शनिदेव ने समझ लिया कि राजा ने मुझको सबसे छोटा बना दिया है। इस पर शनि को बड़ा क्रोध आया और कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चन्द्रमा सवा दो महीना दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति तेरह महीने, बुध और शुक्र एक महीने परन्तु मैं एक राशि पर ढाई अथवा साढ़े सात साल तक रहता हूँ। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दुःख दिया है। राजन्! सुनो रामजी को साढ़े साती आई और बनवास हो गया और रावण पर आई तो राम को लक्ष्मण ने सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी। रावण के कुल का नाश कर दिया। हे राजा अब तुम सावधान रहना राजा कहने लगा जो कुछ भाग्य में होगा देखा जायेगा। उसके बाद अन्य ग्रह तो प्रसन्नता के साथ चले गये परन्तु शनिदेव बड़े क्रोध के साथ वहां से सिधारे। कुछ काल व्यतीत हो जाने पर जब राजा को साढ़े-साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों के सौदागर बनकर अनेक सुन्दर घोड़ों के सहित राजा की राजधानी

में आए। जब राजा ने सौदागरके आने की खबर सुनी तो अश्वपाल को अच्छे-अच्छे घोड़े खरीदने की आज्ञा दी। अश्वपाल ऐसी अच्छी नसल के घोड़े देखकर और उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया और तुरन्त ही राजा को खबर दी। राजा उन घोड़ों को देखकर एक अच्छा सा घोड़ा चुनकर सवारी के लिये चढ़ा। राजा को घोड़े की पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा जोर से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक बड़े जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अन्तर्ध्यान हो गया। इसके बाद राजा अकेला जंगल में भटकता फिरता रहा। बहुत देर के पश्चात् राजा ने भूख और प्यास से दुखी होकर भटकते-भटकते एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को प्यास से व्याकुल देखकर पानी पिलाया। राजा की उंगली में एक अंगूठी थी। वह उसे निकाल कर प्रसन्नता के साथ ग्वाले को दे दी और शहर की ओर चल दिया। राजा शहर में पहुंचकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गया और अपने आपको उज्जैन का रहने वाला तथा अपना नाम वीका बतलाया। सेठ ने उसको कुलीन मनुष्य समझकर जल आदि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बिक्री बहुत अधिक हुई,

तब सेठ उसको भाग्यवान पुरुष समझकर भोजन कराने के लिए अपने साथ ले गया। भोजन करते समय राजा ने आश्चर्य की बात देखी कि खूंटी पर हार लटक रहा है और वह खूंटी उस हार को निगल रही है। भोजन के पश्चात कमरे में आने पर जब सेठ को कमरे में हार न मिला तो सबने यही निश्चय किया कि सिवाय वीका के और कोई इस कमरे में नहीं आया, अतः अवश्य ही उसी ने हार चोरी किया है परन्तु वीका ने हार लेने से मना कर दिया। इस पर पांच-सात आदमी इकट्ठे होकर उसको फौजदार के पास लाये। फौजदार ने उसको राजा के सामने उपस्थित कर दिया और कहा कि ये आदमी तो भला प्रतीत होता है, चोर मालूम नहीं होता, परन्तु सेठ का कहना है कि इसके सिवाय और कोई घर में आया ही नहीं, अवश्य ही इसी ने चोरी की है। तब राजा ने आज्ञा दी कि इसके हाथ-पैर काटकर चौरंगिया किया जाय। राजा की आज्ञा का तुरंत पालन किया गया और वीका के हाथ पैर काट दिए गए। इस प्रकार कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली उसको अपने घर ले गया और कोल्हू पर उसको बिठा दिया। वीका उस पर बैठा हुआ जबान से बैल हांकता

रहा। शनि की दशा समाप्त हो गई और एक रात को वर्षा ऋतु के समय वह मल्हार राग गाने लगा। उसका गाना सुनकर उस शहर के राजा की कन्या उस राग पर मोहित हो गई और दासी को खबर लाने को भेजा कि शहर में कौन गा रहा है। दासी सारे शहर में फिरती-फिरती क्या देखती है कि तेली के घर में चौरंगिया राग गा रहा है। दासी ने महल में आकर राजकुमारी को सब वृत्तान्त सुना दिया। बस उसी क्षण राजकुमारी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया चाहे कुछ हो मैंने इस चौरंगिया के साथ विवाह करना है। प्रातःकाल होते ही जब दासी ने राजकुमारी को जगाना चाहा तो राजकुमारी अनशन व्रत लेकर पड़ी रही। तब दासी ने रानी के पास जाकर राजकुमारी के न उठने का वृत्तांत कहा। रानी ने तुरंत ही वहां पर आकर कुमारी को जगाया और उसके दुःख का कारण पूछा, तो कुमारी ने कहा कि माताजी मैंने यह प्रण कर लिया है कि तेली के घर में जो चौरंगिया है उसी के साथ विवाह करूंगी। माता ने कहा पगली यह क्या बात कह रही है? तुझको किसी देश के राजा के साथ परणाया जायेगा। कन्या कहने लगी कि माताजी मैं अपना प्रण कभी नहीं

तोड़ूंगी। माता ने चिन्तित होकर यह बात राजा को बताई। जब महाराज ने भी आकर यह समझाया कि मैं अभी देश-देशान्तर में अपने दूत भेजकर सुयोग्य, रूपवान एवं बड़े-से-बड़े गुणी राजकुमार के साथ तुम्हारा विवाह करूंगा, ऐसी बात तुमको कभी नहीं विचारनी चाहिए। कन्या ने कहा-"पिताजी मैं अपने प्राण त्याग दूंगी परन्तु दूसरे से विवाह नहीं करूंगी।" इतना सुनकर राजा ने क्रोध से कहा यदि तेरे भाग्य में ऐसा ही लिखा है तो जैसी तेरी इच्छा हो वैसा ही कर। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर में जो चौरंगिया है उसके साथ मैं अपनी कन्या का विवाह करना चाहता हूँ। तेली ने कहा कि यह कैसे हो सकता है, कहाँ आप हमारे राजा और कहाँ मैं एक नीच तेली? परन्तु राजा ने कहा कि भाग्य लिखे को कोई टाल नहीं सकता, अपने घर जाकर विवाह की तैयारी करो। राजा ने उसी समय तोरण और वन्दनवार लगवाकर अपनी राजकुमारी का विवाह चौरंगिया विक्रमादित्य के साथ कर दिया।

रात्रि को जब विक्रमादित्य और राजकुमारी महल में सोये तो आधी रात के समय शनिदेव

ने विक्रमादित्य को स्वप्न दिया कि राजा कहो मुझको छोटा बतलाकर तुमने कितना दुःख उठाया? राजा ने क्षमा मांगी। शनिदेव ने प्रसन्न होकर विक्रमादित्य को हाथ पैर दिये। तब राजा ने कहा महाराज मेरी प्रार्थना स्वीकार करें कि जैसा दुःख आपने मुझे सौंप दिया है ऐसा और किसी को न दें। शनिदेव ने कहा कि तुम्हारी यह प्रार्थना स्वीकार है, जो मनुष्य मेरी कथा सुनेगा या कहेगा उसको मेरी दशा में कभी किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा और जो नित्य ही मेरा ध्यान करेगा या चींटियों को आटा डालेगा उसके सब मनोरथ पूर्ण होंगे। इतना कहकर शनिदेव अपने धाम को चले गये।

राजकुमारी की आँख खुली और उसने राजा के हाथ पांव देखे तो आश्चर्य को प्राप्त हुई। उसको देखकर राजा ने अपना समस्त हाल कहा कि मैं उज्जैन का राजा विक्रमादित्य हूँ। यह बात सुनकर राजकुमारी अत्यन्त प्रसन्न हुई। प्रातःकाल राजकुमारी से उसकी सखियों ने पूछा तो उसने अपने पति का समस्त वृतांत कह सुनाया। तब सब ने प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि ईश्वर ने आपकी मनोकामना पूर्ण कर दी। जब उस सेठ ने यह सुनी तो वह विक्रमादित्य के पास आया और

राजा विक्रमादित्य के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा कि आप पर मैंने चोरी का झूठा दोष लगाया अतः आप मुझको जो चाहें दण्ड दें। राजा ने कहा–मुझ पर शनिदेव का कोप था इसी कारण यह सब दुःख मुझको प्राप्त हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, तुम अपने घर जाकर अपना कार्य करो। सेठ बोला कि मुझे तभी शांति होगी जब आप मेरे घर चलकर प्रीतिपूर्वक भोजन करोगे। राजा ने कहा कि जैसी आपकी मर्जी हो वैसा ही करें। सेठ ने अपने घर जाकर अनेक प्रकार के सुन्दर भोजन बनवाये और राजा विक्रमादित्य को प्रीतिभोज दिया। जिस समय भोजन कर रहे थे एक अत्यंत आश्चर्य की बात सबको दिखाई दी जो खूंटी पहले हार निगल गई थी, वह अब हार उगल रही है। जब भोजन समाप्त हो गया तो सेठ ने हाथ जोड़कर बहुत सी मोहरें राजा को भेंट की और कहा कि मेरे श्रीकंवर नामक एक कन्या है उसका पाणिग्रहण आप करें। इसके बाद सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा के साथ कर दिया और बहुत सा दान-दहेज आदि दिया। इस प्रकार कुछ दिनों तक वहां निवास करने के पश्चात् विक्रमादित्य ने शहर के राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने

की इच्छा है। फिर कुछ दिन के बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों जगह के दहेज में प्राप्त अनेक दास, दासी, रथ और पालकियों सहित विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब शहर के निकट पहुंचे और पुरवासियों ने राजा के आने का सम्वाद सुना तो समस्त उज्जैन की प्रजा अगवानी के लिए आई, तब बड़ी प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे शहर में बड़ा भारी महोत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने शहर में यह सूचना कराई कि शनिश्चर देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि है। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ। इस कारण सारे शहर में सदा शनिश्चर की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिश्चर की इस कथा को पढ़ता या सुनता है शनिदेव की कृपा से सब दुःख दूर हो जाते हैं। शनिवार की कथा को व्रत के दिन अवश्य पढ़ना चाहिए। ओऽम् शान्ति! ओऽम् शान्ति!! ओऽम् शान्ति!!!

अथ शनिदेव जी की आरती

चार भुजा तहि छाजै, गदा हस्त प्यारी।जय॰।
रवि नन्दन गज वन्दन, यम अग्रज देवा।
कष्ट न सो नर पाते, करते तब सेना।जय॰।
तेज अपार तुम्हारा, स्वामी सहा नहीं जावे।
तुम से विमुख जगत में, सुख नहीं पावे।जय॰।
नमो नमः रविनन्दन सब ग्रह सिरताजा।
बन्शीधर यश गावे रखियो प्रभु लाजा।जय॰।

लेजर टाइपसैटिंग: जे के प्रिन्टोग्राफर्स, दिल्ली -6 फोन: 2933995

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे। भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मनका। सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॥ॐ॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहू किसकी। तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी। पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता। मैं मूर्ख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे। करुणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ॐ॥



सप्तवार व्रत कथा

भेंट कर्ता :

प्रकाशक :-
लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्ली मारान, दिल्ली-6
© 23974978, 23917707